ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

जनपद के कवि : त्रिलोचन

– डॉ. गोपाल प्रसाद

आधुनिक हिन्दी कविता की प्रगतिषील धारा के कवियों में एक खास कवि–समूह 'कवि–त्रयी' का नाम आता है। इस कवि–त्रयी में हिन्दी साहित्य के विद्वान् नागार्जुन, षमषेर बहादुर सिंह एवं त्रिलोचन का नाम बड़े आदर के साथ लेते हैं।

मूल रूप से कवि के रूप में जाने जानेवाले कवि त्रिलोचन की पकड़ साहित्य के गद्य एवं पद्य दोनों ही विधाओं पर था। एक कहानी–संग्रह 'देषकाल' एवं एक डायरी 'रोजनामचा' के माध्यम से कवि त्रिलोचन ने जहाँ हिन्दी साहित्य के गद्य विधा को सुषोभित किया है, वहीं अपने दर्जनाधिक काव्य–संग्रह के माध्यम से पद्य विधा को भी समृद्ध करने का कार्य किया है।

20 अगस्त 1917 को उत्तर प्रदेष के सुल्तानपुर जिलांतर्गत एक छोटे–से गाँव कटघरा चिरानीपट्टी में जन्मे वासुदेव सिंह का ही साहित्यिक रूप है–त्रिलोचन। बालक वासुदेव के संस्कृत गुरु देवदत्त जी के द्वारा उन्हें दिए गए नाम 'त्रिलोचन' को आज हिन्दी जगत् बड़े आदर के साथ याद करता है। त्रिलोचन जी ने भी अपने संस्कृत के गुरु के ऋण को कुछ कमतर करने के लिए ही काषी हिन्दू विष्वविद्यालय से अंग्रेजी से एम.ए. करने के साथ–साथ संस्कृत में षास्त्री की उपाधि धारण की।

राष्ट्रभाषा हिन्दी एवं देवभाषा संस्कृत के अलावे त्रिलोचन ने अंग्रेजी, अरबी–फारसी आदि भाषाओं का भी खूब अध्ययन किया तथा अपना गीत, नवगीत, कविता, कहानी, लेख आदि के माध्यम से हिन्दी साहित्य को अपना विषिष्ट देने का कार्य किया।

अपने आरंभिक दिनों में 1930–35 के दौरान बनारस में एक प्राइवेट षिक्षक के रूप में अपने व्यावसायिक जीवन का आरंभ करते हुए त्रिलोचन ने बाद में पत्रकार, प्रूफ रीडर आदि का कार्य तो किया ही, 1938 में वाराणसी से निकलनेवाली मासिक पत्रिका 'वानर' के सहायक संपादक भी रहे। 1939 में मासिक पत्रिका 'हंस' एवं 1941 में मासिक पत्रिका 'कहानी' में सहायक संपादक के रूप में कार्य करने के बाद वे उसी दौरान मुरादाबाद से निकलनेवाली मासिक पत्रिका 'प्रदीप' से भी जुड़े। 1943 के आस–पास साप्ताहिक 'आज' एवं दैनिक 'आज' में सहायक संपादक के रूप में कार्य करते रहने के बाद वे इसी रूप में पुनः 1944 से 1946 के दौरान मासिक पत्रिका 'हंस' से भी जुड़ गए।

1946–1950 के दौरान काषी के ज्ञानमंडल के तत्वावधान में प्रकाषित 'वृहद हिन्दी षब्द कोष' के सहायक संपादक, साप्ताहिक 'समाज' एवं मासिक 'चित्ररेखा' के संपादक के रूप में कार्य करते रहने के बाद 1952–53 में गणेषराय इंटर कॉलेज, जौनपुर में अंग्रेजी के प्रवक्ता के रूप में भी उन्होंने अपना अमूल्य देने का कार्य किया।

1953–54 के दौरान हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से प्रकाषित 'अंग्रेजी–हिन्दी कोष' के लिए मुख्य उप संपादक के रूप में तथा 1954 से 1967 के दौरान नागरी प्रचारिणी सभा में 'हिन्दी षब्द सागर' के सहायक संपादक के रूप में भी कार्य किया।

त्रिलोचन की हिन्दीतर व्यापक प्रतिभा का ही प्रतिफलन रहा कि 1967–72 के दौरान अमरीकी विष्वविद्यालयों से काषी हिन्दू विष्वविद्यालय, वाराणसी में पढ़ने आए छात्रों को उन्होंने हिन्दी–संस्कृत–उर्दू की व्यावहारिक षिक्षा प्रदान करने का कार्य किया तथा 1978 से 1984 के दौरान वे

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

दिल्ली विष्वविद्यालय के उर्दू विभाग में द्विभाषिक कोष (उर्दू–हिन्दी) परियोजना में सहायक संपादक भी रहे। इसके अलावे, अलीगढ़ मुस्लिम विष्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में 1991–92 में विजिटिंग प्रोफेसर रहे, तो 1992–95 के दौरान ईरानी कल्चरल हाउस, नई दिल्ली में फारसी–अंग्रेजी–हिन्दी डिक्षनरी परियोजना में सहायक संपादक भी रहे।

1959 में तत्कालीन बिहार की षीतकालीन राजधानी राँची के राष्ट्रीय प्रेस में प्रबंधक, 1984–90 एवं 1995–2002 के दौरान मुक्तिबोध सृजनपीठ, सागर के अध्यक्ष पद को सुषोभित करने के बाद 2002 के प्रथमार्द्ध से वे मृत्युपर्यंत स्वाध्याय एवं लेखन–कार्य में लग गए।

त्रिलोचन के साहित्यिक व्यक्तित्व ने हिन्दी साहित्य को कुल बाईस ग्रंथों का उपहार दिया। इनमें से पूरे सत्रह काव्य–संग्रह हैं तो पाँच गद्य–साहित्य। 1945 में प्रथम काव्य–संग्रह 'धरती' प्रकाषित होने के बाद वे लगातार लेखन–कार्य से जुड़ गए, जिसका परिणाम ये हुआ कि 1956 में इनके कविता–संग्रह 'गुलाब और बुलबुल', 1957 में 'दिगंत' और 1980 में 'ताप के ताए हुए दिन' भी प्रकाषित हुए, इस कविता–संग्रह पर इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिला।

इसके साथ ही, 1980 में ही 'षब्द', 1981 में 'उस जनपद का कवि हूँ', 1983 में 'अरधान', 1985 में 'अनकहनी भी कुछ कहनी भी', 'फूल नाम है एक' और 'तुम्हें सौंपता हूँ' नामक तीन कविता–संग्रह प्रकाषित हुए जबकि 1987 में 'सबका अपना आकाष' और 'चैती' नामक दो कविता–संग्रहों का इन्होंने प्रणयन किया। 2002 में 'मेरा घर' एवं 2004 में 'जीने की कला' जैसे हिन्दी के काव्य–संग्रह के साथ–साथ त्रिलोचन के 1990 में 'अमोला' नामक अवधी भाषा के एक काव्य–संग्रह भी प्रकाष में आए।

इन कुछ महत्त्वपूर्ण कविता–संग्रह के अलावे 1986 में त्रिलोचन रचित एक कहानी–संग्रह 'देषकाल' एवं 1992 में एक डायरी 'रोजनामचा' जैसे कुछ उल्लेखनीय गद्य–साहित्य भी प्रकाषित हुए।

त्रिलोचन के व्यापक व्यक्तित्व को रेखांकित करते हुए हिन्दी साहित्य ने उन्हें समय–समय पर पुरस्कृत एवं सम्मानित करने का कार्य किया। 1957 एवं 1959 में उन्हें उत्तर प्रदेष हिन्दी समिति पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया, वहीं 1981 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया। 1984 में उत्तर प्रदेष हिन्दी संस्थान सम्मान से सम्मानित करने के बाद 1990 में उन्हें मैथिलीषरण गुप्त पुरस्कार दिया गया।

हिन्दी अकादमी, नई दिल्ली ने 1992 में कवि त्रिलोचन को षलाका सम्मान से सम्मानित किया, जबकि 1993 में उन्हें भवानी प्रसाद मिश्र राष्ट्रीय पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। इसके साथ ही, 1999 में इनके काव्य–संग्रह 'ताप के ताए हुए दिन' के लिए सुलभ साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया तथा 2003 में उन्हें भारतीय भाषा परिषद्, कोलकाता ने भी उन्हें सम्मानित किया।

इतने सारे कृतित्व के फलस्वरूप इतने सारे पुरस्कार एवं सम्मान को प्राप्त कर त्रिलोचन ने अपने व्यक्तित्व को असाधारण तो बना लिया लेकिन कभी अपने रहन–सहन को असाधारण नहीं बना सके। उनके इसी रूप–स्वरूप से ये पता चलता है कि वे जमीन से जुड़े कवि थे। अपने इसी साधारणपन को वे अपनी एक रचना में और अधिक स्पष्ट करते हुए ये कहते भी हैं कि –

वही त्रिलोचन है,
वह–जिसके तन पर गंदे कपड़े हैं
कपड़े भी कैसे–फटे–लटे हैं
यह भी फैषन है, फैषन से कटे–फटे हैं...

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

त्रिलोचन दबे–कुचले लोगों के कवि थे। उनके संपूर्ण साहित्य का अध्ययन करने से भी ये पता चलता है कि उनके अंतर्मन में षोषितों–पीड़ितों के प्रति पीड़ा और अपनत्व के भाव समाहित थे।

अपने–आप को जमीन से जोड़ते हुए एक कविता में वे स्वयं को जनपद का कवि बताते हैं –

मैं उस जनपद का कवि हूँ
मैं जो भूखा–दूखा है...

अपने बारे में लिखी गई त्रिलोचन की ऊपर की पंक्तियाँ और नीचे की पंक्तियों में उनके द्वारा स्वयं को जनपदीय कवि कहने से उनका तात्पर्य स्वयं को भूख और दुःख से जोड़ना है। कहने की आवष्यकता नहीं कि कवि त्रिलोचन ने अपनी समस्त रचनाओं के माध्यम से अपने आस–पास की पीड़ा को जिस तरह से दृष्यांकित करने का कार्य किया है, वह बड़ा ही प्रभावोत्पादक बन पाया है।

कवि त्रिलोचन न केवल अपने विविध विधात्मक व्यक्तित्व के लिए ही जाने जाते हैं बल्कि वे दुःखों के कुषल चित्रकार के रूप में भी जाने जाते हैं। उनके कृतित्व की सबसे बड़ी खूबी ये है कि उन्हें युग–युगांतर तक पाष्चात्य से आयातित सॉनेट का भारतीयकरण करने के लिए भी जाना जाता है और षायद उन्हें ही अकेले इस रूप में जाना जाता रहेगा। इसका सबसे बड़ा कारण ये है कि हिन्दी में इसका प्रयोग करते हुए उन्होंने जो हिन्दी साहित्य में अकूत सॉनेट प्रदान किया है, उस कार्य को कालांतर में अन्य किसी रचनाकार ने उनसे आगे नहीं बढ़ाया है। हिन्दी साहित्य में त्रिलोचन ने रोला छंद में लगभग सहस्राधिक सॉनेट की रचना की है, जो हिन्दी साहित्य की एक अमूल्य निधि है। त्रिलोचन के बारे में नामवर सिंह लिखते हैं–'त्रिलोचन की कविता नए सौंदर्यषास्त्र को जन्म देती है। त्रिलोचन के सॉनेट, गजल, गीत एक अलग तरह का ठेठ हिन्दी का ठाठ है।' (जनसत्ता)

जबकि, उनके भाव एवं भाषा की उत्कृष्टता को एक अलग ही ऊँचाई प्रदान करते हुए षमषेर बहादुर सिंह एक जगह ये कहते हैं कि–'...मैं पहले यह अर्ज कर दूँ कि त्रिलोचन पर बहस करने के लिए कोई संस्कृत दां चाहिए, षमषेर नहीं। ऐसा षख्ष, जो पिंगल षास्त्र और षब्द षास्त्र–संस्कृत और अवधी और ब्रज को अच्छी तरह जानता हो और हिन्दी साहित्य से पूरी तरह परिचित हो।' (स्थापना–सात, सापेक्ष–63)

त्रिलोचन के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता है कि उन्होंने केवल दमित एवं पीड़ित के लिए ही लिखा, उन्होंने प्रकृति और मूल्यों के लिए भी लिखा। उनके बारे में मैनेजर पाण्डेय और अधिक स्पष्ट करते हुए ये लिखते हैं कि–'त्रिलोचन घटनाओं के कवि नहीं हैं, वे मूल्यों के कवि हैं। उनकी कविता में सामाजिक–राजनीतिक घटनाओं का चरित्र–वर्णन बहुत कम है, मानव जीवन की दषाओं और अनुभवों की अभिव्यक्ति करते हुए संघर्ष, आस्था, जिजीविषा, प्रेम, न्याय और स्वतंत्रता जैसे जीवन–मूल्यों की व्यंजना करते हैं।' (आलोचना–82)

कहने का तात्पर्य ये है कि जनपद के कवि त्रिलोचन ने अपने संपूर्ण साहित्य में जिस प्रकार से षब्द, षिल्प, भाव एवं अर्थ को महत्त्व देते हुए जमीन से जुड़े बेबसों एवं असहायों के साथ–साथ प्रकृति, प्रेम एवं सौहार्द्र को रेखांकित एवं रूपायित करते हैं, वह अपने–आप में न केवल अद्वितीय बन पड़ा है बल्कि अविस्मरणीय बन पड़ा है। ऐसा बिरला कवि इस असार संसार से बिना किसी को कुछ बताए या बिना किसी से कोई षिकवा–षिकायत किए 9 दिसंबर 2007 को सदा के लिए विदा हो गया।

षिकवा–षिकायत इसलिए भी कि त्रिलोचन की उनके जीते–जी मृत्युपर्यंत उपेक्षा हुई। त्रिलोचन जब तक रहे, अधिकांष लोग उनसे लापरवाही से मिले। हद तो तब हो गई कि जब वे बीमार पड़े, तो

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

हिन्दी साहित्य के बड़े–बड़े साहित्यकार तक उनसे मिलने के लिए अस्पताल तक न गए और न ही उनके निधन के बाद भी उनके घर तक पहुँच पाए...(आजकल, अप्रैल–'10)

...जहाँ तक त्रिलोचन की बात है, तो वे जब तक रहे...उन्होंने नवोदित साहित्यकारों को भी महत्त्व दिया और अपने से वरिष्ठ साहित्यकारों को भी यथोचित सम्मान दिया। निस्संदेह, ऐसे बिरले व्यक्तित्व एवं अनूठे कृतित्व वाले साहित्यकार का आज भी इंतजार है और भविष्य में भी प्रतीक्षा रहेगी...

डॉ. गोपाल प्रसाद
एम. ए., पी–एच. डी., बी. एड्.
'सी. पी. निवास', मालगोदाम, नवादा–805110 (बिहार)
09934850362, 08340719234
gopalnirdosh@gmail.com

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)